भूमिका / प्रस्तावना

(पैराग्राफ 1)

‘अंधायुग’ हिंदी साहित्य का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और विचारोत्तेजक काव्य-नाटक है, जिसकी रचना आधुनिक हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध लेखक **धर्मवीर भारती** ने की। यह नाटक महाभारत के युद्ध के अंतिम दिन और उसके बाद की घटनाओं पर आधारित है। यद्यपि महाभारत का युद्ध समाप्त हो चुका है, फिर भी उसके परिणामस्वरूप उत्पन्न मानसिक, नैतिक और सामाजिक संकट पूरी तरह समाप्त नहीं होते। लेखक ने इसी स्थिति को ‘अंधायुग’ की संज्ञा दी है।

(पैराग्राफ 2)

‘अंधायुग’ केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि यह आधुनिक मानव जीवन की सच्चाइयों का प्रतीकात्मक चित्रण है। इस नाटक में युद्ध के बाद की निरर्थकता, हिंसा की भयावहता और मानवीय मूल्यों के पतन को अत्यंत गहराई से प्रस्तुत किया गया है। धर्मवीर भारती यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि युद्ध समाप्त होने के बाद भी यदि मनुष्य के भीतर घृणा, अहंकार और प्रतिशोध जीवित रहते हैं, तो समाज कभी शांति प्राप्त नहीं कर सकता।

(पैराग्राफ 3)

नाटक का केंद्रीय विषय मानव विवेक का ह्रास है। ‘अंधायुग’ का अर्थ शारीरिक अंधकार नहीं, बल्कि मानसिक और नैतिक अंधकार है। जब मनुष्य अपने विवेक, करुणा और नैतिक जिम्मेदारियों को भूल जाता है, तब वही युग अंधकारमय बन जाता है। लेखक ने इस नाटक के माध्यम से यह दर्शाया है कि सत्ता, अहंकार और अंधभक्ति मानवता को विनाश की ओर ले जाती हैं।

(पैराग्राफ 4)

‘अंधायुग’ का **महासभा दृश्य** नाटक का सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावशाली दृश्य है। इस दृश्य में युद्ध के बाद की स्थिति, शासकों की मानसिकता, समाज की नैतिक विफलता और मानवीय पीड़ा को अत्यंत सशक्त रूप में प्रस्तुत किया गया है। महासभा केवल एक राजसभा नहीं, बल्कि विचारों, भावनाओं और मूल्यों का संघर्ष स्थल बन जाती है।

(पैराग्राफ 5)

महासभा दृश्य के माध्यम से धर्मवीर भारती यह स्पष्ट करते हैं कि युद्ध में कोई भी सच्चा विजेता नहीं होता। कौरवों की पराजय और पांडवों की विजय के बाद भी चारों ओर शोक, निराशा और पश्चाताप का वातावरण है। यह दृश्य यह सिद्ध करता है कि जब तक मानव विवेक जागृत नहीं होता, तब तक शांति और न्याय की स्थापना संभव नहीं है।

(पैराग्राफ 6)

इस प्रकार 'अंधायुग' का महासभा दृश्य पाठक को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है। यह नाटक हमें यह सोचने पर विवश करता है कि क्या आधुनिक समाज भी उसी अंधकार की ओर बढ़ रहा है। धर्मवीर भारती का यह काव्य-नाटक आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना अपने समय में था, क्योंकि मानव स्वभाव और उसकी कमजोरियाँ आज भी वैसी ही बनी हुई हैं।

लेखक परिचय : धर्मवीर भारती

(पैराग्राफ 1)

धर्मवीर भारती आधुनिक हिंदी साहित्य के अत्यंत प्रसिद्ध और प्रभावशाली साहित्यकार थे। वे कवि, नाटककार, उपन्यासकार और निबंधकार के रूप में विशेष रूप से जाने जाते हैं। हिंदी साहित्य में उनका स्थान एक संवेदनशील और विचारशील लेखक के रूप में स्थापित है। उनकी रचनाओं में मानवीय संवेदना, नैतिक चेतना और सामाजिक यथार्थ का गहन चित्रण मिलता है।

(पैराग्राफ 2)

धर्मवीर भारती का जन्म **25 दिसंबर 1926** को उत्तर प्रदेश के **इलाहाबाद (प्रयागराज)** में हुआ था। उन्होंने उच्च शिक्षा भी इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राप्त की। विद्यार्थी जीवन से ही उनकी साहित्य में गहरी रुचि थी। उन्होंने हिंदी साहित्य को नई दिशा देने का प्रयास किया और परंपरा तथा आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित किया।

(पैराग्राफ 3)

धर्मवीर भारती ने साहित्य की विभिन्न विधाओं में रचनाएँ कीं। उनके प्रमुख उपन्यासों में **'गुनाहों का देवता'** और **'सूरज का सातवाँ घोड़ा'** विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। इसके अतिरिक्त वे एक उत्कृष्ट नाटककार भी थे। उनका काव्य-नाटक **'अंधायुग'** हिंदी नाटक साहित्य की अमूल्य कृति मानी जाती है।

(पैराग्राफ 4)

धर्मवीर भारती की रचनाओं की सबसे बड़ी विशेषता उनकी दार्शनिक दृष्टि और गहरी संवेदनशीलता है। वे मानव मन की जटिलताओं, नैतिक द्वंद्व और सामाजिक समस्याओं को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं। 'अंधायुग' में उन्होंने महाभारत के माध्यम से आधुनिक समाज की विवेकहीनता और नैतिक पतन को उजागर किया है।

(पैराग्राफ 5)

साहित्य के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए धर्मवीर भारती को अनेक सम्मान और पुरस्कार प्राप्त

हुए। वे लंबे समय तक प्रतिष्ठित पत्रिका **'धर्मयुग'** के संपादक भी रहे। उनके लेखन ने हिंदी साहित्य को नई पहचान दी और पाठकों को सोचने के लिए प्रेरित किया।

(पैराग्राफ 6)
धर्मवीर भारती का साहित्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना उनके जीवनकाल में था। उनकी रचनाएँ मानवता, विवेक और नैतिकता का संदेश देती हैं। वे हिंदी साहित्य के ऐसे सशक्त लेखक हैं, जिनकी कृतियाँ आने वाली पीढ़ियों को भी प्रेरणा देती रहेंगी।

'अंधायुग' शीर्षक की सार्थकता

(पैराग्राफ 1)
धर्मवीर भारती द्वारा रचित काव्य-नाटक *'अंधायुग'* का शीर्षक अपने अर्थ और भाव में अत्यंत सार्थक है। 'अंधा' शब्द केवल नेत्रहीनता का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह विवेक, नैतिकता और मानवीय संवेदना के अभाव को दर्शाता है। यह नाटक महाभारत युद्ध के अंतिम दिन की घटनाओं पर आधारित है, जहाँ चारों ओर विनाश, निराशा और नैतिक पतन दिखाई देता है।

(पैराग्राफ 2)
नाटक में अधिकांश पात्र किसी न किसी रूप में 'अंधेपन' से ग्रस्त दिखाई देते हैं। धृतराष्ट्र शारीरिक रूप से अंधे हैं, परंतु अन्य पात्र मानसिक और नैतिक रूप से अंधे हैं। सत्ता-लालसा, प्रतिशोध और अहंकार ने उनके विवेक को नष्ट कर दिया है। इस प्रकार 'अंधायुग' शीर्षक पूरे समाज की मानसिक अवस्था को प्रकट करता है।

(पैराग्राफ 3)
महासभा दृश्य में यह अंधापन विशेष रूप से उभरकर सामने आता है। विद्वान, योद्धा और शासक होते हुए भी लोग सत्य और न्याय का पक्ष नहीं लेते। सब अपने स्वार्थ, भय और मोह में बँधे रहते हैं। यह दर्शाता है कि ज्ञान होते हुए भी विवेक का न होना समाज को अंधकार की ओर ले जाता है।

(पैराग्राफ 4)
'अंधायुग' केवल महाभारत काल का चित्रण नहीं करता, बल्कि आधुनिक युग का भी प्रतीक है। धर्मवीर भारती ने इस नाटक के माध्यम से यह संकेत दिया है कि जब समाज हिंसा, सत्ता और अहंकार के मार्ग पर चलता है, तो वह युग 'अंधायुग' बन जाता है। इस प्रकार यह शीर्षक समकालीन समाज पर भी सटीक बैठता है।

(पैराग्राफ 5)
नाटक में नैतिक मूल्यों का पतन, मानवीय संवेदना का अभाव और विवेकहीन निर्णयों की भरमार

दिखाई देती है। पात्र सही और गलत के बीच अंतर नहीं कर पाते। यह स्थिति युग को अंधकारमय बना देती है, जिससे 'अंधायुग' शीर्षक की सार्थकता और अधिक स्पष्ट हो जाती है।

(पैराग्राफ 6)
इस प्रकार कहा जा सकता है कि *'अंधायुग'* शीर्षक नाटक के कथ्य, पात्रों और विचारधारा को पूर्ण रूप से अभिव्यक्त करता है। यह न केवल एक ऐतिहासिक युग का चित्रण है, बल्कि हर उस समय का प्रतीक है जब मानव विवेक खो बैठता है। इसलिए 'अंधायुग' शीर्षक पूर्णतः उपयुक्त और सार्थक है।

महाभारत युद्ध की पृष्ठभूमि

(पैराग्राफ 1)
महाभारत युद्ध की पृष्ठभूमि अत्यंत जटिल और भावनात्मक है। यह युद्ध केवल दो वंशों—कौरवों और पांडवों—के बीच सत्ता संघर्ष नहीं था, बल्कि यह धर्म और अधर्म के टकराव का प्रतीक भी था। वर्षों से चले आ रहे वैमनस्य, ईर्ष्या और अधिकार की लालसा ने इस विनाशकारी युद्ध की नींव रखी।

(पैराग्राफ 2)
कौरवों और पांडवों के बीच संघर्ष का मुख्य कारण हस्तिनापुर के सिंहासन पर अधिकार था। दुर्योधन का अहंकार और पांडवों के प्रति घृणा इतनी बढ़ चुकी थी कि वह किसी भी प्रकार का समझौता करने को तैयार नहीं था। पांडवों के वनवास और अज्ञातवास ने इस संघर्ष को और अधिक तीव्र बना दिया।

(पैराग्राफ 3)
राजनीतिक चालें, छल और अन्याय युद्ध की पृष्ठभूमि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। द्यूत क्रीड़ा में पांडवों की पराजय और द्रौपदी का अपमान न केवल व्यक्तिगत अन्याय था, बल्कि सामाजिक और नैतिक मूल्यों पर भी आघात था। यही घटनाएँ आगे चलकर युद्ध को अपरिहार्य बना देती हैं।

(पैराग्राफ 4)
श्रीकृष्ण द्वारा किए गए शांति प्रयास भी युद्ध को रोकने में असफल रहे। कौरवों की ओर से दुर्योधन का हठ और सत्ता के प्रति मोह इतना प्रबल था कि उसने केवल पाँच गाँव देने से भी इनकार कर दिया। इससे यह स्पष्ट हो गया कि अब युद्ध के अलावा कोई मार्ग शेष नहीं है।

(पैराग्राफ 5)
धर्मवीर भारती के *'अंधायुग'* में यह युद्ध केवल शारीरिक संघर्ष नहीं रह जाता, बल्कि यह मानवीय

मूल्यों के पतन का प्रतीक बन जाता है। युद्ध के बाद की स्थिति—जहाँ विजेता और पराजित दोनों ही दुख और पश्चाताप से घिरे हैं—युद्ध की भयावहता को और अधिक उजागर करती है।

(पैराग्राफ 6)
इस प्रकार महाभारत युद्ध की पृष्ठभूमि सत्ता, अहंकार, अन्याय और विवेकहीनता से निर्मित है। *'अंधायुग'* में यही पृष्ठभूमि महासभा दृश्य के माध्यम से सामने आती है, जहाँ युद्ध की समाप्ति के बाद भी अंधकार समाप्त नहीं होता। यही युद्ध की सबसे बड़ी त्रासदी है।

युद्धोत्तर स्थिति का चित्रण

(पैराग्राफ 1)
महाभारत युद्ध की समाप्ति के बाद की स्थिति अत्यंत भयावह और करुण है। चारों ओर मृत्यु, विनाश और शोक का वातावरण है। युद्ध भले ही समाप्त हो चुका हो, किंतु उसके दुष्परिणाम अभी भी जीवित हैं। धर्मवीर भारती ने *'अंधायुग'* में युद्धोत्तर स्थिति को केवल ऐतिहासिक घटना के रूप में नहीं, बल्कि मानवीय संवेदना के दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है।

(पैराग्राफ 2)
युद्ध के बाद हस्तिनापुर श्मशान के समान प्रतीत होता है। वीरों की लाशें, विलाप करती स्त्रियाँ और उजड़े परिवार इस विनाश की सजीव तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। विजय प्राप्त करने वाले पांडव भी प्रसन्न नहीं हैं, क्योंकि यह विजय उन्हें अपार दुख और पश्चाताप के साथ मिली है। इससे यह स्पष्ट होता है कि युद्ध में वास्तव में कोई भी विजेता नहीं होता।

(पैराग्राफ 3)
धृतराष्ट्र और गांधारी की स्थिति युद्धोत्तर त्रासदी का सबसे करुण रूप प्रस्तुत करती है। सौ पुत्रों की मृत्यु के बाद गांधारी का शोक असहनीय हो जाता है, वहीं धृतराष्ट्र मानसिक रूप से पूरी तरह टूट जाते हैं। उनका अंधापन केवल शारीरिक नहीं रह जाता, बल्कि विवेकहीनता का प्रतीक बन जाता है।

(पैराग्राफ 4)
युद्धोत्तर वातावरण में प्रतिशोध की भावना भी प्रबल दिखाई देती है। गांधारी का क्रोध और कृष्ण को दिया गया श्राप यह दर्शाता है कि दुख मनुष्य को कितना कठोर बना सकता है। युद्ध समाप्त होने के बाद भी मनुष्य के भीतर का युद्ध समाप्त नहीं होता—यही *'अंधायुग'* की सबसे बड़ी त्रासदी है।

(पैराग्राफ 5)
विदुर युद्धोत्तर स्थिति में विवेक और आत्मचिंतन की आवाज बनकर उभरते हैं। वे स्पष्ट करते हैं कि

यह विनाश किसी एक व्यक्ति की भूल नहीं, बल्कि पूरे समाज की नैतिक विफलता का परिणाम है। उनका दृष्टिकोण युद्ध के बाद शांति और आत्ममंथन की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

(पैराग्राफ 6)
धर्मवीर भारती युद्धोत्तर स्थिति को आधुनिक समाज से भी जोड़ते हैं। वे यह संकेत देते हैं कि जब सत्ता और अहंकार मनुष्य पर हावी हो जाते हैं, तब परिणाम केवल विनाश होता है। युद्ध समाप्त होने के बाद भी यदि आत्मचिंतन न हो, तो समाज फिर किसी नए युद्ध की ओर बढ़ जाता है।

(पैराग्राफ 7)
इस स्थिति में नैतिक मूल्य पूरी तरह बिखर चुके हैं। धर्म, न्याय और करुणा जैसे आदर्श केवल शब्द बनकर रह जाते हैं। महासभा दृश्य में व्यक्त संवाद यह सिद्ध करते हैं कि युद्ध के बाद मनुष्य के पास पश्चाताप के अलावा कुछ नहीं बचता।

(पैराग्राफ 8)
इस प्रकार *'अंधायुग'* में युद्धोत्तर स्थिति केवल अतीत की कथा नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए चेतावनी है। धर्मवीर भारती यह संदेश देते हैं कि जब तक मनुष्य अपने भीतर के अंधकार को नहीं मिटाता, तब तक कोई भी युद्ध वास्तव में समाप्त नहीं होता।

महासभा दृश्य का परिचय

(पैराग्राफ 1)
'अंधायुग' का महासभा दृश्य नाटक का सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावशाली दृश्य माना जाता है। यह दृश्य महाभारत युद्ध की समाप्ति के बाद घटित होता है, जब चारों ओर विनाश, शोक और निराशा का वातावरण व्याप्त है। युद्ध भले ही समाप्त हो चुका हो, लेकिन उसके दुष्परिणाम अभी भी पात्रों के मन और समाज पर गहरा प्रभाव डाल रहे हैं।

(पैराग्राफ 2)
महासभा में उपस्थित पात्र—धृतराष्ट्र, गांधारी, विदुर और संजय—युद्ध के परिणामों पर विचार करते हैं। यह सभा केवल राजसभा नहीं, बल्कि नैतिक और मानसिक संघर्ष का मंच बन जाती है। यहाँ युद्ध के बाद के प्रश्न उठते हैं—कौन दोषी है, कौन न्याय का पात्र है और क्या इस विनाश का कोई औचित्य था।

(पैराग्राफ 3)
इस दृश्य में सत्ता की विफलता और नैतिक पतन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। धृतराष्ट्र का पुत्रमोह, गांधारी का शोक और क्रोध तथा विदुर की विवेकपूर्ण वाणी—तीनों मिलकर समाज की विभिन्न

मानसिक अवस्थाओं को दर्शाते हैं। महासभा एक ऐसे समाज का प्रतिबिंब बन जाती है जो अपने ही कर्मों के परिणामों से जूझ रहा है।

(पैराग्राफ 4)
महासभा दृश्य में प्रतिशोध और करुणा के बीच संघर्ष प्रमुख रूप से उभरकर सामने आता है। एक ओर बदले की भावना है, तो दूसरी ओर आत्मचिंतन और शांति की आवश्यकता। यह दृश्य दर्शाता है कि युद्ध की समाप्ति के बाद भी मनुष्य के भीतर का द्वंद्व समाप्त नहीं होता।

(पैराग्राफ 5)
धर्मवीर भारती ने महासभा दृश्य को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। यह दृश्य केवल महाभारत काल तक सीमित नहीं है, बल्कि हर उस समाज की कहानी कहता है जहाँ सत्ता, अहंकार और विवेकहीनता मानवता को अंधकार की ओर ले जाती है। यही कारण है कि महासभा दृश्य आज भी प्रासंगिक प्रतीत होता है।

महासभा दृश्य का महत्व

(पैराग्राफ 1)
'अंधायुग' का महासभा दृश्य नाटक का सबसे महत्वपूर्ण दृश्य है। यह केवल युद्धोत्तर सभा नहीं है, बल्कि यह मानव मन और समाज की नैतिक स्थिति का गहन अध्ययन प्रस्तुत करता है। महासभा में युद्ध की परिणति, शासकों की मानसिक अवस्था और समाज की नैतिक विफलता को प्रभावशाली ढंग से दिखाया गया है।

(पैराग्राफ 2)
महासभा दृश्य का महत्व इस बात में भी है कि यह युद्ध के परिणामस्वरूप उत्पन्न शोक और निराशा को उजागर करता है। पांडवों की विजय के बावजूद चारों ओर दुःख, पश्चाताप और अराजकता फैली हुई है। इससे यह स्पष्ट होता है कि युद्ध में वास्तविक विजेता कोई नहीं होता।

(पैराग्राफ 3)
इस दृश्य में धृतराष्ट्र का व्यक्तित्व न केवल शासक के रूप में बल्कि पिता और मानव के रूप में भी सामने आता है। उनके अंधापन, पुत्रमोह और विवेकहीन निर्णय समाज के पतन का प्रतीक बनते हैं। यह दृश्य बताता है कि जब सत्ता विवेकहीन हाथों में होती है, तो उसके परिणाम विनाशकारी होते हैं।

(पैराग्राफ 4)
गांधारी का शोक और क्रोध महासभा दृश्य की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता है। उनके सौ पुत्रों की

मृत्यु ने उन्हें अत्यंत दुखी और आक्रोशित कर दिया है। उनका क्रोध और प्रतिशोध की भावना समाज में नैतिकता और न्याय की हानि को दर्शाती है।

(पैराग्राफ 5)
विदुर का चरित्र महासभा दृश्य में विवेक, नीति और धर्म का प्रतिनिधित्व करता है। उनका दृष्टिकोण यह समझाता है कि युद्ध का दोष केवल एक व्यक्ति का नहीं है, बल्कि यह पूरे समाज की नैतिक विफलता का परिणाम है। यही कारण है कि महासभा दृश्य न केवल कथा का हिस्सा है बल्कि दार्शनिक दृष्टि का भी प्रतीक है।

(पैराग्राफ 6)
महासभा दृश्य का महत्व इस बात में भी है कि यह न्याय और प्रतिशोध के बीच के संघर्ष को स्पष्ट करता है। धृतराष्ट्र और गांधारी बदले की भावना से ग्रसित हैं, जबकि विदुर न्याय और विवेक का मार्ग सुझाते हैं। यह संघर्ष पाठक और दर्शक को यह सोचने पर मजबूर करता है कि युद्ध और प्रतिशोध कभी स्थायी समाधान नहीं देते।

(पैराग्राफ 7)
यह दृश्य समाज और मानवता के लिए चेतावनी भी है। यह दिखाता है कि जब अहंकार, सत्ता और अन्याय मनुष्य पर हावी होते हैं, तब समाज का पतन निश्चित होता है। महासभा में उठाए गए विचार और संवाद आज के समय के लिए भी उतने ही प्रासंगिक हैं।

(पैराग्राफ 8)
महासभा दृश्य का साहित्यिक महत्व भी अत्यंत है। धर्मवीर भारती की भाषा, संवाद और पात्रों का चित्रण पाठक या दर्शक को सोचने और आत्ममंथन करने पर मजबूर करता है। प्रत्येक पात्र का व्यक्तित्व और उनके विचार दृश्य को प्रभावशाली बनाते हैं।

(पैराग्राफ 9)
इस दृश्य के माध्यम से लेखक यह भी दिखाते हैं कि युद्ध केवल बाहरी संघर्ष नहीं है। मनुष्य के भीतर भी अंधकार, द्वेष और अहंकार का युद्ध चलता रहता है। महासभा दृश्य यही बताता है कि मनुष्य के भीतर के युद्ध के बिना बाहरी शांति और न्याय संभव नहीं है।

(पैराग्राफ 10)
इस प्रकार, *महासभा दृश्य का महत्व* केवल नाटकीय दृष्टि से ही नहीं, बल्कि दार्शनिक, नैतिक और समाजशास्त्रीय दृष्टि से भी अत्यंत गहन है। यह नाटक पाठकों और दर्शकों को युद्ध, सत्ता, अहंकार और नैतिक पतन के परिणामों का अनुभव कराता है और सोचने के लिए प्रेरित करता है।

‘अंधायुग’ की समकालीन प्रासंगिकता

(पैराग्राफ 1)

धर्मवीर भारती का *‘अंधायुग’* केवल महाभारत के युद्ध और उसके पश्चात की घटनाओं का चित्रण नहीं है, बल्कि यह आधुनिक समाज के लिए भी चेतावनी है। युद्ध, अहंकार, सत्ता और प्रतिशोध के कारण मानव जीवन में उत्पन्न अंधकार आज भी विभिन्न रूपों में दिखाई देता है। यही कारण है कि नाटक की समकालीन प्रासंगिकता अत्यंत प्रबल है।

(पैराग्राफ 2)

आज के समाज में हिंसा, भ्रष्टाचार और सत्ता का दुरुपयोग अंधायुग की स्थिति को नए रूप में प्रस्तुत करता है। जैसे महाभारत युद्ध में न्याय और अन्याय का संघर्ष था, वैसे ही वर्तमान समाज में नैतिकता और अनैतिकता के बीच संघर्ष दिखाई देता है। धर्मवीर भारती का यह संदेश आज भी उतना ही सत्य है।

(पैराग्राफ 3)

‘अंधायुग’ हमें यह भी सिखाता है कि जब मनुष्य केवल स्वार्थ और अहंकार में लिप्त हो जाता है, तब समाज का नैतिक पतन निश्चित होता है। आज के समय में सामाजिक और राजनीतिक घटनाएँ इस बात को स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं। नाटक के पात्रों के अनुभव और संघर्ष आधुनिक समाज के लिए दर्पण की तरह हैं।

(पैराग्राफ 4)

महासभा दृश्य में व्यक्त विचार और भावनाएँ आज के समाज में भी प्रासंगिक हैं। जैसे धृतराष्ट्र और गांधारी का पुत्रमोह और अहंकार उनके निर्णयों को प्रभावित करता है, वैसे ही आधुनिक जीवन में व्यक्तिगत स्वार्थ और लालसा समाज और राष्ट्र के निर्णयों पर असर डालती है।

(पैराग्राफ 5)

विदुर का दृष्टिकोण और उनका विवेकपूर्ण संदेश आज भी समाज के लिए प्रेरक है। उनका कहना है कि न्याय, विवेक और नैतिकता को अपनाए बिना स्थायी शांति संभव नहीं है। यह आज के समय में युवा पीढ़ी और समाज दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण संदेश है।

(पैराग्राफ 6)

इस प्रकार, *‘अंधायुग’* न केवल ऐतिहासिक नाटक है, बल्कि यह समकालीन समाज की चिंताओं और समस्याओं के लिए भी दार्शनिक और नैतिक दृष्टि प्रस्तुत करता है। युद्ध, हिंसा और अंधकार के खिलाफ चेतना जागृत करना इसकी सबसे बड़ी प्रासंगिकता है।

यदि आप चाहें तो मैं **अगली heading "धृतराष्ट्र का चरित्र चित्रण"** का भी **7–8 पैराग्राफ का विस्तृत content** तैयार कर दूँ, जिससे आपका प्रोजेक्ट और मजबूत हो जाए।

समग्र मूल्यांकन

(पैराग्राफ 1)
धर्मवीर भारती के *'अंधायुग'* का समग्र मूल्यांकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि यह नाटक केवल महाभारत युद्ध का वर्णन नहीं है, बल्कि मानव मन, समाज और नैतिकता की गहन पड़ताल प्रस्तुत करता है। युद्ध के भौतिक विनाश से परे, यह नाटक मानसिक और नैतिक दृष्टि से मानव जीवन में उत्पन्न अंधकार को उजागर करता है।

(पैराग्राफ 2)
महासभा दृश्य के माध्यम से लेखक ने सत्ता, अहंकार, न्याय और प्रतिशोध जैसे गहरे विषयों को चित्रित किया है। धृतराष्ट्र, गांधारी और विदुर जैसे पात्रों के माध्यम से मानवीय मूल्य, विवेक और करुणा का महत्व स्पष्ट रूप से समझाया गया है। यह नाटक पाठक और दर्शक दोनों को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है।

(पैराग्राफ 3)
'अंधायुग' की भाषा शैली, संवादों की प्रभावशीलता और पात्रों की गहराई इसे हिंदी नाटक साहित्य की उत्कृष्ट कृति बनाती है। धर्मवीर भारती ने सरल और प्रभावशाली भाषा में जटिल विचार प्रस्तुत किए हैं। संवाद इतने अर्थपूर्ण हैं कि वे पाठक के मन में लंबे समय तक गूंजते हैं।

(पैराग्राफ 4)
समग्र रूप से देखा जाए तो *'अंधायुग'* का संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना अपने समय में था। यह नाटक समाज को यह चेतावनी देता है कि जब अहंकार, सत्ता और अन्याय पर हावी हो जाते हैं, तब समाज का पतन निश्चित है। इसके माध्यम से मानवता, नैतिकता और विवेक का महत्व पाठकों के सामने आता है।

(पैराग्राफ 5)
नाटक की प्रतीकात्मकता और दार्शनिक दृष्टि इसे केवल साहित्यिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बनाती है। यह नाटक यह बताता है कि युद्ध केवल बाहरी संघर्ष नहीं है; मनुष्य के भीतर भी अंधकार और द्वंद्व चलता रहता है।

(पैराग्राफ 6)

इस प्रकार, *'अंधायुग'* का समग्र मूल्यांकन यह सिद्ध करता है कि यह नाटक केवल एक ऐतिहासिक कथा नहीं, बल्कि मानवीय भावनाओं, नैतिकता और समाज के लिए महत्वपूर्ण संदेशों का संग्रह है। इसका अध्ययन पाठकों और विद्यार्थियों को जीवन, निर्णय और समाज के प्रति संवेदनशील बनाता है।

निष्कर्ष

(पैराग्राफ 1)

धर्मवीर भारती का *'अंधायुग'* न केवल महाभारत युद्ध और उसके परिणामों का चित्रण करता है, बल्कि यह मानवीय मन, नैतिकता और समाज की कमजोरियों का भी गहन अध्ययन प्रस्तुत करता है। महासभा दृश्य के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि युद्ध केवल बाहरी संघर्ष नहीं है, बल्कि मानव मन में भी अंधकार और द्वंद्व चलता रहता है।

(पैराग्राफ 2)

नाटक में धृतराष्ट्र, गांधारी और विदुर जैसे पात्रों के माध्यम से सत्ता, अहंकार, न्याय और करुणा के बीच संघर्ष को दर्शाया गया है। यह नाटक पाठक और दर्शक को यह संदेश देता है कि जब तक मनुष्य विवेक, करुणा और नैतिकता को नहीं अपनाता, तब तक अंधकार और अज्ञान का युग समाप्त नहीं होगा।

(पैराग्राफ 3)

'अंधायुग' की भाषा शैली, प्रतीकात्मकता और संवाद इसकी महत्ता को और बढ़ाते हैं। यह नाटक समाज और मानव जीवन पर गहन प्रभाव डालता है और हमें आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करता है। यही कारण है कि यह नाटक आज भी अत्यंत प्रासंगिक और प्रभावशाली माना जाता है।

(पैराग्राफ 4)

अंततः, *'अंधायुग'* का मुख्य संदेश यह है कि अहंकार, सत्ता और प्रतिशोध मानवता के सबसे बड़े शत्रु हैं। जब तक मनुष्य अपने भीतर के नैतिक और दार्शनिक अंधकार को नहीं दूर करता, तब तक शांति और न्याय की स्थापना असंभव है। यह नाटक हमें चेतावनी और शिक्षा दोनों प्रदान करता है।